



निराला की काव्य-साधना

बलदेव राम

सह आचार्य, हिन्दी राजकीय कन्या महाविद्यालय, मेड़ता सिटी

हिन्दी के छायावादी कवियों में सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है। अपने उपनाम के समान ही निराला जी का सम्पूर्ण व्यक्तित्व अद्भुत प्रतिभाओं का निराला सम्मिश्रण था। वे संत सम्राट कबीर के समान रूढ़ियों पर निर्मम प्रहार करने की अक्खड़ता लेकर, तुलसी के विशाल अध्ययन एवं कलाकार की सूक्ष्म – दृष्टि से समन्वित होकर, सूर की निश्छल तन्मयता एवं भावुकता लेकर, रवीन्द्र की मनस्विता तथा बिहारी का कला-सौन्दर्य अपनाकर अवतरित हुए थे। एक कुशल कलाकार के हाथ, कवि की वाणी, पहलवान सा सीना और दार्शनिक के चरणों का बेजोड़ संगम निराला में देखने को मिलता है। उन्होंने जीवन-व्यापी संघर्ष से शेर की भाँति लड़ते हुए अंत तक हार इन्हीं विविध सम्बलों के कारण नहीं मानी। उन्होंने जीवन-भर जो संघर्ष किया, जिन अभावों से रूबरू हुए उसी कारण उनके विशालकाय शरीर में दीनता एवं निर्धनता के प्रति एक अजीब कोमलता, करुणा एवं सहानुभूति की भावना देखने को मिलती है। उनके सम्पूर्ण साहित्य में पीड़ित एवं दलित मानवता के उद्धार की वाणी को स्वर मिला और ऐसा वे करने में इसलिए समर्थ हो सके, क्योंकि उनके पास हृदय की भावुकता के साथ ही विशाल बौद्धिकता का अजेय सम्बल था। निराला जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। अपने इसी ज्ञान के आधार पर वे रूढ़ियों, आडम्बरों, विडम्बनाओं, स्वार्थों, कुत्साओं एवं नीचता का खुल कर विरोध करने में समर्थ रहे। बदले में जो उपेक्षा, विरोध मिला वो स्वाभाविक था। कबीरदास जी के साथ भी यही देखने को मिलता है। पर कस्तूरी की सुगंध को आज तक कोई भी दबा कर नहीं रख सका है। आज हिन्दी संसार निराला की क्रांतिकारी प्रतिभा के सामने नत-मस्तक है और उनकी साहित्य-साधना से स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा है।

महाप्राण निराला सरस्वती के वरद-पुत्र थे। इनका जन्म सन 1896 में बसन्त पंचमी के दिन हुआ था। ऐसा प्रसिद्ध है कि 14 वर्ष की अवस्था में ये कविता लिखने लग गये थे। प्रारम्भ में इन्होंने महिषादल के राजा के यहां नौकरी की, परन्तु बाद में उसे छोड़कर रामकृष्ण मिशन के दार्शनिक पत्र समन्वय का सम्पादन करने लगे सन 1923 में कलकत्ता से इन्होंने मतवाला नामक पत्र का सम्पादन किया। इन दिनों इनकी जूही की कली और पंचवटी प्रसंग कविता के साथ ही अनामिका नामक काव्य-संग्रह प्रकाशित हो गया था। 1926 के बाद इनका सम्बन्ध लखनऊ से प्रकाशित सुधा नामक पत्रिका से हो गया। यहाँ उन्हें साहित्य-सृजन का पर्याप्त अवसर मिला उनका जीवन अभावों और गरीबी में व्यतीत हुआ दुर्भाग्य से पहले पत्नी और बाद में पुत्री वियोग भी इनको झेलना पड़ा। पुत्री की याद में सरोज स्मृति इनकी चर्चित रचना है। इन्हीं कारणों से वे कुछ विक्षिप्त से हो गए। 1961 में 15 अगस्त को इनका देहावसान हो गया।

साहित्यिक संसार—

कविता संग्रह — अनामिका, परिमल, अनामिका (द्वितीय (संग्रह), गीतिका
 कुकुरमुत्ता, बेला, नये पत्ते, अपरा, आराधना, अर्चना
खण्डकाव्य—तुलसीदास। इसमें तुलसी के जीवन का अध्ययन एक सर्वथा नवीन
 बौद्धिक दृष्टिकोण से किया गया है।
उपन्यास — अलका, प्रभावती, निरुपमा, काले कारनामे, अप्सरा, चमेली, चोटी की पकड़।
कहानी संग्रह—सखी, चतुरी—चमार, लिली, सुकुल की बीबी।
रेखाचित्र — कुल्ली भाट, बिल्लेसुर, बकरिहा
निबन्ध संग्रह— प्रबन्ध— पद्म, प्रबन्ध—प्रतिमा, चाबुक, प्रबन्ध—परिचम।
आलोचनात्मक ग्रन्थ—रवीन्द्र—कविता कानन। इस ग्रन्थ में निराला ने रवीन्द्र की अनेक
 कविताओं का भावार्थ देते हुए उनका आलोचनात्मक अध्ययन किया है।
अनुवाद — आनन्दमठ, कपाल कुंडला, चन्द्रशेखर, दुर्गेशनन्दिनी,
 कृष्णकांत का बिल, रजनी, देवी चौधरानी, राधारानी, विष्वक्ष, राजसिंह।
जीवनियाँ— ध्रुव, भीष्म और राणा प्रताप।
नाटक— समाज, शकुन्तला और उषा—अनिरुद्ध।
स्फुट स्चनाएँ — हिन्दी— बंगला—शिक्षा, रस—अलंकार, वात्स्यायन—कामसूत्र, तुलसीकृत रामायण की
 टीका

निराला मूलतः छायावादी कवि थे। अतः उनके प्रारम्भिक काव्य में प्रेम और शृंगार के दर्शन होते हैं तथा परवर्ती साहित्य में भी यह एकदम विलुप्त नहीं हुआ है। अनामिका, परिमल और गीतिका में तो सर्वाधिक कविताएँ प्रेम और शृंगार परक हैं। निराला ने प्रेम को एक शास्वत और उदात्त भावना के रूप में स्वीकार किया है। निराला का प्रेम—भाव केवल शारीरिक सीमाओं में ही आबद्ध नहीं है, वरन् वह अनन्त सीमाओं तक व्याप्त है। नयनों के डोरे लाल गुलाल, जुही की कली, यामिनी जागी, बसन्त की परी, वनबेला आदि कविताओं में प्रेम और शृंगार भावना का प्रसार दिखाई देता है। प्रेम के प्रति कविता में कहा है—

प्रेम सदा ही तुम असूत्र हो
 उर—उर के हीरों के हार
 गुँथे हुए प्राणियों को तुम
 गुँथे न कभी सदा ही सार ।।

निराला जी का शृंगार वर्णन भी सभ्य एवं शालीन है। अपवादस्वरूप कुछ गीतों में उन्होंने आलिंगन और चुम्बन तक की भावनाएं व्यक्त की हैं। जैसे— चुम्बन, शेफालिका, जुही की कली, मौन रही हार आदि कविताएँ इसी श्रेणी की हैं।

रोम—रोम में समाई जहाँ, चुम्बन की लालसा

ज्योति नयन ज्योति से, पलकों से पलक मिले।

निराला के गीतों के बारे डॉ. भागरथ मिश्र का कचन इस प्रकार है—विरह में कहीं पर गम्भीर करुणा की गहन निराशा है, असफलता, हार और सर्वस्व लुट जाने की दुखद कराह है तो कहीं पर गम्भीर करुणा के साथ उदात्तता भी मिलती है।

निराला स्वभावतः पुरुष भावना वाले कवि थे तथापि उनकी रचनाओं में प्रकृति व नारी सौन्दर्य के चित्र देखने को मिलते हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य का अंकन उनके प्रारम्भिक गीत से लेकर अंतिम गीत में मिलता है। मानवीकरण शैली में प्रकृति चित्रण किया है। प्रभाती, बासन्ती, सध्या सुन्दरी, आदि कविताएँ इसी प्रकार की हैं। प्रकृति सौन्दर्य की रहस्यात्मक व्यंजना इस प्रकार है—

कौन तुम शुभ्र किरण—वसना
किसलय वसना नववय लतिका
मिली मधुर—प्रिय उर तरु—पतिका।।

प्रकृति का तथ्यात्मक वर्णन, कहीं उद्धीपन रूप में, कहीं मानवीकृत—रूप में तथा कहीं ऋतुओं के मनोहर चित्रों का अंकन है।

नारी सौन्दर्य के बाह्य रूप के प्रति उनका अधिक आकर्षण नहीं मिलता। पंचवटी प्रसंग में उन्होंने सूर्यणखा के रूप—सौन्दर्य का जो वर्णन किया है वह रीति व भक्ति काल की नायिकाओं के रूप—वर्णनों के अनुसार ही है—

हारे हैं सारे नेत्र नेत्रों को हेर—हेर—
विश्व भर को मदोन्मत्त करने की मादकता
भरी है विधाता ने इन्हीं दोनों नेत्रों में।

निराला राष्ट्रीयता के कवि थे। इनके साहित्य में प्रारम्भ से ही राष्ट्र—प्रेम का स्वर उभर कर आया है। महाराज शिवाजी का पत्र, जागो फिर एक बार आदि प्रसिद्ध कविताओं में देश—प्रेम ने पर्याप्त स्थान पाया है। महाराज शिवाजी का पत्र में आपसी फूट का वर्णन कर एकता की भावना को जागृत किया है—

जितनी विरोधी शक्तियों से
हम लड़ रहे हैं आपस में
सच मानों खर्च है यह
शक्तियों का व्यर्थ ही।।

जागो फिर एक बार में कवि देश जागृति का संदेश दे रहा है—
जागो फिर एक बार।
सिंहनी की गोद से
छीनता रे शिशु कौन?

निराला ने जीवन में जो संघर्ष किया उसी कारण उनके रचना संसार में मानवतावादी संवेदना को स्थान मिला। जन—सामान्य के प्रति उनके हृदय में गहरी टीस थी। दरिद्र, भिक्षुक और समाज द्वारा हीन समझे जाने वाले प्राणियों की दशा उन्हें मजबूर करती है कि छायावारी कल्पना से परे यथार्थ का चित्रण करें। कण कविता में दलितों को उद्बोधन देते हुए लिखा है—

पड़े हुए सहते हो अत्याचार
पद पद पर सदियों के पद प्रहार।।

डॉ. भटनागर ने निराला की निराला प्रवृत्ति को लक्ष्य कर लिखा है कि —वास्तव में पुरानी कविता की जितनी कड़ियाँ निराला ने तोड़ी हैं, उतनी दूसरे कवि ने नहीं तोड़ी। छन्दों की मुक्ति दाता के रूप में तो प्रसिद्ध हैं ही परन्तु आधुनिक कविता के विषय—विकास की दृष्टि से भी वह उतने ही महत्वपूर्ण स्थान के अधिकारी हैं।

निराला ने अपनी रचनाओं में व्यंग्य एवं विनोद के माध्यम से बहुत कुछ किया है क्योंकि उन्होंने जिस व्यवस्था को देखा, उसमें जो कुछ हो रहा था उसको व्यंग्य के माध्यम से उजागर किया है। निराला की परवर्ती रचनाओं में व्यंग्य और विनोद प्रखर रूप में मुखरित हुआ है। कहीं वर्ग-संघर्ष, कहीं अंधविश्वास, कहीं सामाजिक मानव-जीवन और कहीं राजनीति इनके व्यंग्य की शिकार हुई है। कुकुर मुत्ता एक सफल व्यंग्य काव्य है—

मानव जहाँ बैल घोड़ा है
कैसा तन-मन का जोड़ा है
देख रहा है विज्ञ आधुनिक
वन्य भाव का यह कोड़ा है।

दान कविता का व्यंग्य भी व्यापक है—

झोली से पुए निकाल लिए, बढ़ते कपियों के हाथ दिए।
देखा भी नहीं उधर फिर कर, जिस ओर रहा वह भिक्षु इतर।

निराला के काव्य-संसार में समय के साथ बदलाव भी देखने को मिलता है। प्रारम्भ में छायावादी रचनाएं तथा इसके बाद प्रगतिवाद की ओर अग्रसर हुए। इसके बाद नव-मानवतावादी और अरविन्द-दर्शन की ओर। इसका कारण प्रगतिशील चिन्तन ही रहा है। कुकुर मुत्ता इनकी चर्चित कृति है। इसमें उन्होंने शोषक पर व्यंग्य करते हुए शोषित जनता का पक्ष लिया है—

अबे, सुन बे, गुलाब
भूल मत गर पाए खुशबु, रंगों आब
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतरा रहा कैपिटलिस्ट

सार:—

महाप्राण निराला का काव्य एक ओर प्राचीनता से जुड़ा है तो दूसरी ओर नवीनता तथा युगबोध से समन्वित है। सौन्दर्य का सरोवर हिलोरें ले रहा है साथ ही शृंगार सरिता कल-कल नाद करती बह रही है। वस्तुतः निराला सतत् प्रयोगधर्मी कवि रहे हैं क्योंकि वे अपनी प्रारम्भिक कविताओं से लेकर अंत तक प्रयोग करते रहे। कविता के मुक्ति-दाता जिस मुक्त छंद को आपने ईजाद किया वह आज बहु-प्रचारित व बहु-प्रचलित बन गया है। प्रसाद व पंत जैसी गहराई भी इनकी भाषा में देखने को मिलती है। इनके काव्य में सौन्दर्य, देश-प्रेम, मानव-प्रेम, उदात्त करुणाशीलता, शृंगार भावना आदि सर्वत्र व्याप्त है। ये छायावाद के उन्नयन में जितने अग्रसर रहे, उतने ही प्रगतिवाद के उत्कर्ष में। इस प्रकार महाकवि निराला का कवि-व्यक्तित्व हिन्दी साहित्य के लिए अतीव प्रेरणादायी माना जाता है तथा इनका रचना संसार हिन्दी-साहित्य की एक अमूल्य निधि है।

सन्दर्भ—

01. निराला की साहित्य साधना (तीन खंड) रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नयी दिल्ली।
02. निराला: आत्महन्ता आस्था—दूधनाथ सिंह।
03. महाप्राण निराला—गंगा प्रसाद पांडे।
04. निराला संचयन।

05. विकिपीडिया ।

06. निराला रचनावली खण्ड—1 सं. नन्दकिशोर नवल,राजकमल

प्रकाशन प्रा.लि.नयी दिल्ली ।